



Theme:
Freedom
आज़ादी

**Comic Stories
and Art Work**

**Events and
Photos**

New Entries

Just For Fun



**THE KUTUMB
FOUNDATION**

दास्तान-ए-मोहल्ला

Winter Edition 2017-18

**INDRADHANUSH
GOAL OF LIFE
QISSAGADH
DHAMAA
CHAUKDI**

INDEX / सूची

- Editorial
- Submission of Participants
- Events
 - Art Reach Festival
 - Workshop on Puberty and Health
 - Pyar Kiya Toh Darna Kya
 - Bokaroo
 - Painting Competition on Diwali
 - Dhamaa Chaukdi
 - Film Screenings
 - Certificates Ceremony to Qissebaaz members
- Goal of Life
- Indradhanush Programme
- Just For Fun
- New Entries

Editorial / संपादकीय

गणतंत्र दिवस और भारत का संविधान

स्वतंत्र भारत (Independent India) का अपना संविधान (Constitution) 26 जनवरी, सन् 1950 में लागू किया गया था । भारत के संविधान में भारतीय नागरिकों के अधिकार और नियम स्पष्ट किए गए हैं. कानून की नजर में भारत का हर एक नागरिक बराबर है और किसी को भी धर्म जाति रंग के हिसाब से ऊंचा या नीचे नहीं माना जा सकता.

संविधान के अनुसार भारत को लोकतांत्रिक व्यवस्था वाला गणराज्य घोषित किया गया । भारत का संविधान डॉ बी आर अंबेडकर ने लिखा था जिससे भारत की मौजूदा सरकारी एक्ट 1935 को बदल दिया गया था. भारत का संविधान जो कि डॉक्टर बी आर अंबेडकर ने लिखा था उसे 26 नवंबर 1949 को पास कर दिया गया था.विधान का निर्माण करते समय इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस आदि राष्ट्रों के संविधान से कई अच्छी बातें ग्रहण की गईं । इस दृष्टि से भारतीय संविधान विश्व का एक श्रेष्ठतम संविधान स्वीकार किया जाता है । भारतीय संविधान की सब से बड़ी विशेषता यह मानी जाती है कि इसमें देश को एक- धर्म –निरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है ।

मौलिक अधिकारों का अर्थ

मौलिक अधिकार (**Fundamental Rights**) उन अधिकारों को कहा जाता है जो व्यक्ति के जीवन के लिये मौलिक होने के कारण संविधान द्वारा नागरिकों

को प्रदान किये जाते हैं और जिनमें राज्य द्वारा हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता। ये ऐसे अधिकार हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिये आवश्यक हैं और जिनके बिना मनुष्य अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकते हैं। ये अधिकार कई कारणों से मौलिक हैं:-

1. इन अधिकारों को मौलिक इसलिये कहा जाता है क्योंकि इन्हे देश के संविधान में स्थान दिया गया है।
2. ये अधिकार व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष के विकास हेतु मूल रूप में आवश्यक हैं, इनके अभाव में व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध हो जायेगा।
3. इन अधिकारों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता।
4. मौलिक अधिकार न्याय योग्य हैं तथा समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से प्राप्त होते हैं।

मौलिक अधिकारों का वर्गीकरण *Classification of Fundamental Rights*

भारतीय संविधान (**Indian Constitution**) में नागरिकों के मौलिक अधिकारों का वर्णन संविधान के तीसरे भाग में अनुच्छेद **12** से **35** तक किया गया है। इन अधिकारों में अनुच्छेद **12, 13, 33, 34** तथा **35** का संबंध अधिकारों के सामान्य रूप से है। **44** वें संशोधन (**amendment**) के पास होने के पूर्व संविधान में दिये गये मौलिक अधिकारों को सात श्रेणियों में बांटा जाता था परंतु इस संशोधन के अनुसार संपत्ति के अधिकार को सामान्य कानूनी

अधिकार बना दिया गया। भारतीय नागरिकों को छह मौलिक अधिकार **(Fundamental Rights)** प्राप्त है :-

1. समानता का अधिकार (Right to Equality): अनुच्छेद (Article) 14 से 18 तक।

2. स्वतंत्रता का अधिकार (Right to Freedom): अनुच्छेद (Article) 19 से 22 तक।

3. शोषण के विरुद्ध अधिकार (Right against exploitation): अनुच्छेद (Article) 23 से 24 तक।

4. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार: (Right to Freedom of Religion) अनुच्छेद (Article) 25 से 28 तक।

5. सांस्कृतिक तथा शिक्षा सम्बंधित अधिकार: Cultural and Educational Rights.

अनुच्छेद (Article) 29 से 30 तक।

6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार: Right to Constitutional Remedies (Article) 32

दास्तान-ए-आज़ादी

इस बार जब हमने इंद्रधनुष के प्रतिभागियों से पूछा के उनके लिए आज़ादी के क्या मायने /मतलब है, तो काफ़ी अलग अलग प्रस्तुतियां आई, किसी ने बोला के उन्हे आज़ादी चाहिए रोक टोक से, बलात्कारियों से, समाज की दकियानूसी सोच से, किसी ने कहा उन्हे आज़ादी चाहिए अपनी मर्ज़ी से बाहर आने जाने की, दोस्तों के साथ घूमने की और मर्ज़ी के पहनावे की ।

आज़ादी का मतलब सबके लिए अलग हो सकता है तो इसका सीधा मतलब ये है के, हम सब अलग हैं, हमारी इच्छायें , बाधायेँ , परेशानियाँ, पारिवारिक सम्मेलन अलग हैं । हो सकता है किसी लड़के के लिए बाहर जाना और घूमने आम बात हो, लेकिन वही उसकी बहन के लिए एक इच्छा हो, जिसे वो अभी तक पूरी ना कर पाई हो। हमें अपने भविष्य की दिशा तय करने की और मनपसंद जीवनशैली अपनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए , लेकिन गरीबी , सांप्रदायिकता , असमानता जो की पित्रसत्ता, जाती प्रथा, पूंजीवाद , ब्राह्मणवाद से बढ़ती है ,इनसे हम अभी तक जकड़े हुए हैं । यह सब काफ़ी हद तक हमारी स्वतंत्रता रोकती है। अब कैसे रोकती है , ये सोचना आपका काम है क्यूंकी ज़रा ज़ोर लगाने पर आपको अपनी आस पास के माहौल मे इसके उदाहरण मिल जाएँगे वरना आप इस विषय मे अपने दोस्त, पियर लीडर से चर्चा कर सकते हैं ।

थोड़ा सोचें अपने परिवार के ढाँचे के बारे मे तो दिखता है के घर मे सबसे ज़्यादा पिताजी आज़ाद हैं, उन्हे किसी से कही जाने से पहले अनुमति लेने की

ज़रूरत नहीं पड़ती और घर के ज़रूरी फ़ैसले भी वहीं लेते हैं। अगर ये माना जाता है के स्वतंत्रता एक अहम पहलू है पैसा या कमाई तो हमें ये समझना चाहिए कि वो पैसे भी तो तभी कमा पाते हैं, जब माँ घर में काम करती है, खाना बना के देती है, जब चीज़ों का ध्यान रखती हैं, तभी तो घर और परिवार की रेल का एंजिन चलता है, अगर ड्राइवर ना हो, तो कितना भी तेल / ईंधन डालने पर गाड़ी नहीं चलेगी। है ना ? माँ भी अगर बाहर जाके काम करती हैं, फिर भी आज़ादी Father को ज़्यादा होती है, उसके बाद बड़े बेटे को सबसे ज़्यादा आज़ादी होती है, घर की लड़कियों को सबसे कम, ऐसा क्यों ? क्या परिवार या समाज में एक ही व्यक्ति को इतने सारे अधिकार और स्वतंत्रता मिलना ख़तरनाक हो सकता है ? क्या वो आज़ादी ख़तरनाक हो सकती है, जब हम एक ही तरह के शरीर, या चेहरे को खूबसूरत माने, एक ही तरह के विचार किसी धर्म के बारे में, आदर्श सुंदरता, आदर्श पति /पत्नी ख़तरनाक हो सकते हैं। अगर हम ये सोचते हैं के आदमी शारीरिक रूप से मज़बूत हैं तो आप को याद रखना चाहिए के एक बच्चे को जन्म देना सबसे दर्दनाक पल होता है, खेत में या मज़दूर औरतें जो औरतें धूप में काम करती हैं, क्या उन्हें भी मज़बूत नहीं कहा जाएगा ? इसी चीज़ से समझते हुए हमें ये बदलाव लाने की ज़रूरत है के लोगो को डब्बों से बाहर आने की आज़ादी दी जाए, लड़कों को कमज़ोरी व्यक्त करने की आज़ादी, घर में पढ़ाई या काम करने की आज़ादी, बच्चों को संभालने की आज़ादी और लड़कियों को 'ना' कहने की आज़ादी, बाहर का काम करने की आज़ादी etc. और जो लड़का या लड़की की श्रेणी में नहीं आते उन्हें भी इज़्ज़त और अवसर भरे जीवन जीने की आज़ादी।

इसलिए Freedom और Diversity (विविधता) एक साथ रहने वाले बंधु हैं।
इसलिए मेरे विचार से कुछ और तरह की स्वतंत्रता होनी चाहिए, ग़लती करने की और उनसे सीखने की आज़ादी, (Freedom of mobility/movement) /चलने फिरने की आज़ादी, खेलने की आज़ादी, अपने विचार बिना डर (हिंसा का डर, पक्ष पात का डर) के व्यक्त करने की आज़ादी। Freedom to Bodily Integrity and Choice, Feel safe अपने शरीर को सुरक्षित व अपने शरीर में सहज महसूस करने की आज़ादी, अपने शरीर के बारे में जानने की आज़ादी व अपने हिसाब से उठने बैठने चलने, कपड़े पहनने की आज़ादी, अपने शरीर का ध्यान रखने की आज़ादी व रूढ़िवादी सोच से आज़ादी। Bodily Freedom के साथ Mental Freedom भी ज़रूरी है ना, तो जानने, सोचने, विचार करने व बनाने की आज़ादी, हम अपने विचार खुद बना सकते हैं, व बदल सकते हैं, ज़रूरी नहीं के जो सब सोचते हैं या मानते हैं, हम भी वही सोचें। सवाल करने की आज़ादी, जवाब माँगने की आज़ादी। हमारे निर्णय हम खुद सोच समझ के लेंगे तो ज़्यादा खुश रह पाएँगे।

कई बार ये भी होता है के हमें अपने अधिकार और आज़ादी के लिए लड़ना पड़ता है, समाज से जूझना पड़ता है, जैसे की Saudi Arabia में बहुत सालों की संघर्ष के बाद औरतों को गाड़ी चलाने का अधिकार अब मिला है, अमेरिका में 1920 से पहले औरतों को वोट डालने का अधिकार नहीं था, और भारत में 1961 में Dowry Prohibition Act लागू हुआ था जो की दहेज लेने या देने को एक अपराध मानता है। ऐसे काफ़ी सारे आंदोलन हुए हैं, आरक्षण के लिए, जाती प्रथा के खिलाफ, औरतों के हक़ के लिए, ग़रीबों व

मज़दूरों के हक़ और परिस्थिति के लिए । अंत में बस यही कहना चाहूँगी के सही अभ्यास आज़ादी और हक़ों का तभी हो सकेगा जब एक का अधिकार या आज़ादी किसी दूसरे के हक़ /आज़ादी में बाधा ना डाले या दूसरे की इज़्ज़त, हक़, अधिकार या गोपनीयता (PRIVACY) का उल्लंघन ना करे। पोलिस भी आपके घर में बिना वॉरेंट के नहीं आ सकती, चोर / बलात्कारी/ घरेलू हिंसा / करने वाले लोगो को सज़ा मिलती है क्योंकि वो अपनी आज़ादी को ग़लत अंजाम दे रहे हैं, व दूसरे की आज़ादी को भंग कर रहे हैं । हर अधिकार के साथ एक कर्तव्य भी आता है, जिसे हमें समझना चाहिए । जैसे की हम हिंसा या चोरी से आज़ादी माँग सकते हैं, पर हिंसा करने की आज़ादी नहीं माँग सकते ।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई एक समूह दूसरे की स्वतंत्रता का उल्लंघन ना करे, लोकतांत्रिक सोच में इसी समस्या से निपटने के लिए राज्य या सरकार का निर्माण होता है । इसीलिए हम 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मानते हैं क्योंकि इसी दिन हर एक व्यक्ति को समान अधिकार मिले थे और संविधान लागू हुआ था । लेकिन यह कहना के हम सब समान हैं शारीरिक , भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक रूप से ग़लत होगा क्योंकि यह कहकर हम उनसे उनकी विशिष्टता छीन लेंगे ,लेकिन विविधता में भी समानता होती है। अगर असमानता ----- ऐसी हो जैसे, बंगाली, मारवाड़ी, गुजराती, , नेपाली, का खान पान, वेश भूषा अलग होने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन अगर असमानता ऊपर से नीचे हो एक सीढ़ी की तरह , जैसे जाती प्रथा , पित्र सत्ता , आर्थिक असमानता जो की संसाधन (resources) , भूमिकाओं (roles), occupation(काम काज) का विभाजन इस ढंग से करती है जिसमें

एक समुदाय के पास ज़्यादा शक्ति व प्रतिनिध्व होता है , हमें ऐसी असमानता से लड़ना है ।

धन्यवाद



Submission of ID participants on Freedom

लड़कियों को भी छोटे कपड़े पहें ने की आज़ादी चाहिए ,घर से बाहर जाने की आज़ादी, लड़को की तरह बड़े होकर भी खेलने की आज़ादी ,और हमें रात मे भी बाहर घूमने की आज़ादी चाहिए । बाहर वालो को अपने लड़को को मना करना चाहिए ना की हमारे बारे मे बातें बनाए । अर्रे हम क्या माँगे ?

आज़ादी!! By: **कशिश, इंद्रधनुष निज़ामुद्दीन**

I feel free when I finish my homework: **Kumkum**

Freedom is when I will be able to do things according to me and Freedom is everyone's rights: **Rajkumar**

Freedom cannot be expressed in words, it can only be felt: **Rahul**

Freedom is when I can stay alone at home: **Muskaan**

Indradhanush at Ghevra

* आजादी *

आजादी पर गाँव, देहात में रहने वालों का विचार:-

आजादी जैसा कि नाम से पता चलता है स्वतंत्रता। हमारा देश आजादी का हमें 70 वर्ष से अधिक समय देने के बावजूद भी कुछ ऐसे गाँव, देहात, जिला आदि हैं जिनमें लोग रहते हैं उनमें से ज्यादातर लाडकियों हैं। वह लाडकियों पढ़ाई तो करना चाहते हैं परन्तु उनके माँ-बाप उन्हें पढ़ाई के लिए बाहर काजेल शहरों में उन्हें पढ़ाने के लिए नहीं भेजते। उनके माँ-बाप सोचते हैं कि ज्यादा पढ़ने से वह जवान लड़का सीख जाती है न जाने ऐसे कुछ कुर्विचार सोचते हैं। अतः उन जैसी हजारों माँ-बाप से हम गुजारिश करते हैं कि उन्हें अपना जीवन जीने की आजादी दो।

Name - Robinhood Pandey....

FREEDOM
Freedom
Means
Gender
Equality
 PARDEEP

I CANT
 EXPLORE
 FREEDOM
 BECAUSE I
 AM NOT FREE
 TO DO ANYTHING.

आजादी

आजादी चाहिए मुझे आजादी चाहिए ।

मैं जहाँ तक पढ़ना चाहती हूँ
मुझे वहाँ तक पढ़ने दिए जाने की
आजादी चाहिए ।

मुझे मेरे माता-पिता पढ़ाना चाहते हैं
पर समाज रोकाता है बाहर जाने से ।

समाज के से रोके जाने की आजादी
चाहिए ।

आजादी चाहिए मुझे आजादी चाहिए ।

Dangeeta

Freedom?

Freedom for me when
all peoples have their
rights.

When all girls can
go to schools, it's
mean freedom for

EDIT BY Sumit

मुझे बाहर जाने की आज़ादी और घूमने की आज़ादी चाईए, जैसे पक्षी को हक्क होता है पूरा उड़ने का. जैसे हम लड़कियाँ कहीं ंबाहर जाती हैं तो बाहर वाले लोग उल्टा सीधा बोलते हैं, उन्हे मैं ये कहना चाहती हू के दूसरे की लड़कियों को मत बोलो, अपने बच्चो को बोलो को बोलो जिनकी वजह से हमें बाहर जाने को नहीं मिलता.

कशिश- इंद्रधनुष निज़ामुद्दीन 2018

मुझे अपने मर्ज़ी के कपड़े पहेंन ने की और खेलने की आज़ादी होनी चाईए. मुझे घर के काम मे भी आज़ादी मिलनी चाहिये, घर से बाहर निकालने की आज़ादी मिलनी चाहिए ।

हमें सोने , खेलने से आज़ादी महसूस होती है –
सानिया,घेवरा इंद्रधनुष

हमारे देश को आज़ाद हुए भी 70 वर्ष से अधिक हो गये लेकिन अब भी भारत के कई गाँव और शहर और परिवार ऐसे हैं जहा लड़कियाँ है और वो लड़कियाँ पढ़ना चाहती हैं, पर फिर भी उनके माप बापउन्हे कॉलेज मे पढ़ने नहीं भेजते । वो सोचते हैं के लड़कियाँ ज़्यादा पढ़के ज़बान लड़ानाऔर जवाब देना सीखती हैं । ऐसे करोड़ो लोगो से हमारी ये गुज़ारिश है के अपनी बेटियों और बहुओं को अपनी मर्ज़ी से जीने दो ।

By: **Robinhood Pandey** at Ghevra Basic Computer Class

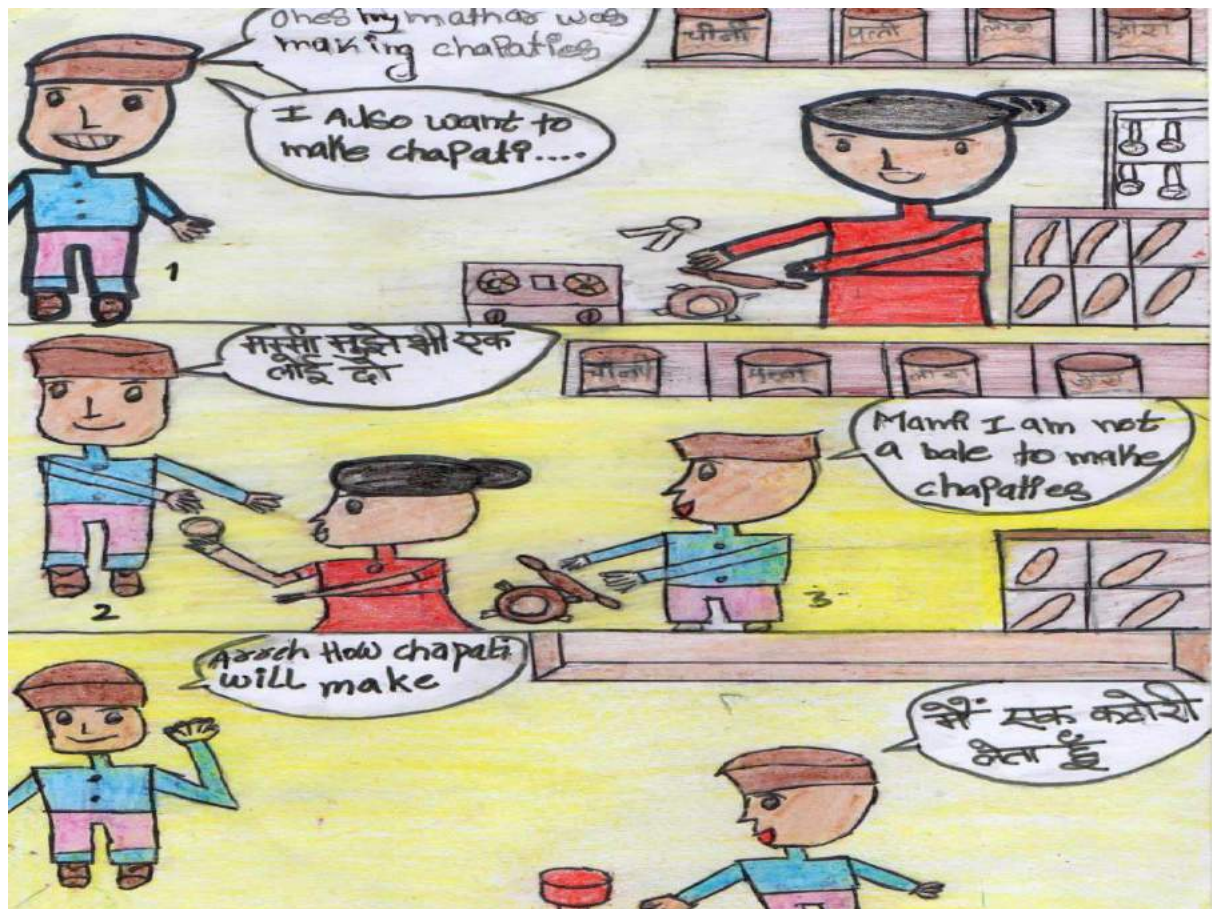
परंपराओं से बंधे नारिणों का जीवन

परंपरा एक ऐसा शक्तिशाली दैतयार है जिसके द्वारा अनपढ़ लोग स्त्रीयों का शोषण करते हैं। कई स्त्रीयों तो इस परंपरा के कारण ही मरी हैं। भगवत गीता और कुरान शरीफ में भी लिखा है स्त्रीयों को देवी के समान रखना चाहिए। लेकिन उस बात को कोई भी व्यक्ति नहीं समझता। जब बेटियाँ पढ़ना चाहती हैं तो उसे उसके पिताजी या आस-पास के समाज के लोग कहते हैं बेटियों को ना पढाया जाता। पढ़े पढ़ हमारी परंपरा नहीं है। बेटियाँ

तो पढ़-लिखकर हमारा मुँह का ला करवा देती हैं। इसी परंपरा के कारण ही तो भारत में नारिणों की जनसंख्या काफी कम हो गई है और वे पढ़-लिखकर क्या करते हैं चोरी-चकारी, सुन-खरावा, मार-पिट और गुंडा-गिंडी आदि। जब उन लोगों की परंपरा नहीं टूटती जब उनके बच्चे पढ़ गलत काम करते हैं। जब हमने अपने सभी परंपरा को तोड़ दिया है तो स्त्रियों के ऊपर जो परंपरा का जाल है उसे क्या नहीं तोड़ दें हम?

Nizamuddin Sunder Nursery Participants at Art Reach Festival (Bikaner House). ID Basic level participants showing their comic stories after a comic making workshop conducted by Sangeeta. (Top to bottom)

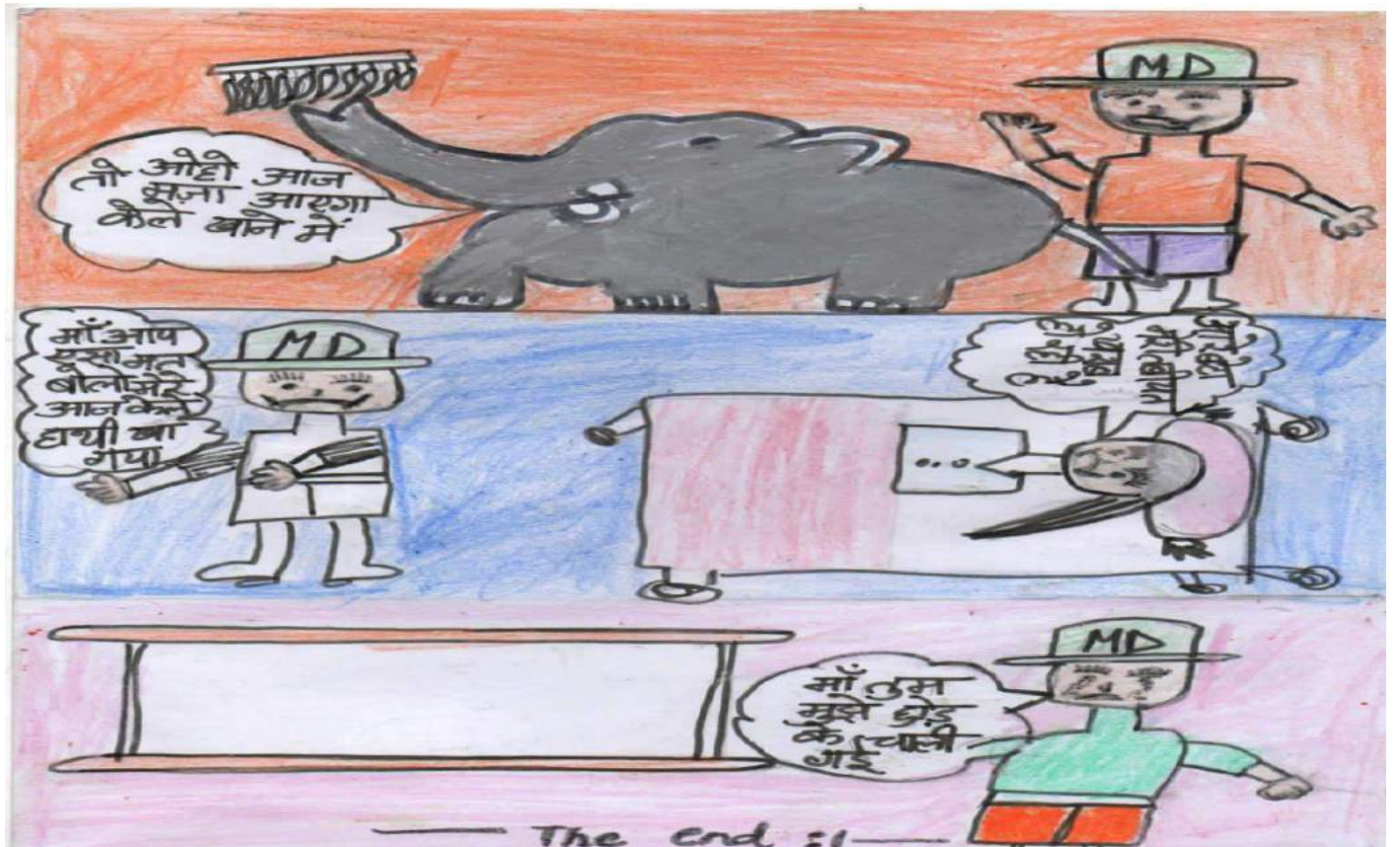




फली रोटी: कशिश (Indradhanush at Nizamuddin)



एक महेंती लड़का : समरीन (Indradhanush at Nizamuddin)



Session on Puberty, Health, Gender Stereotypes and Body Image

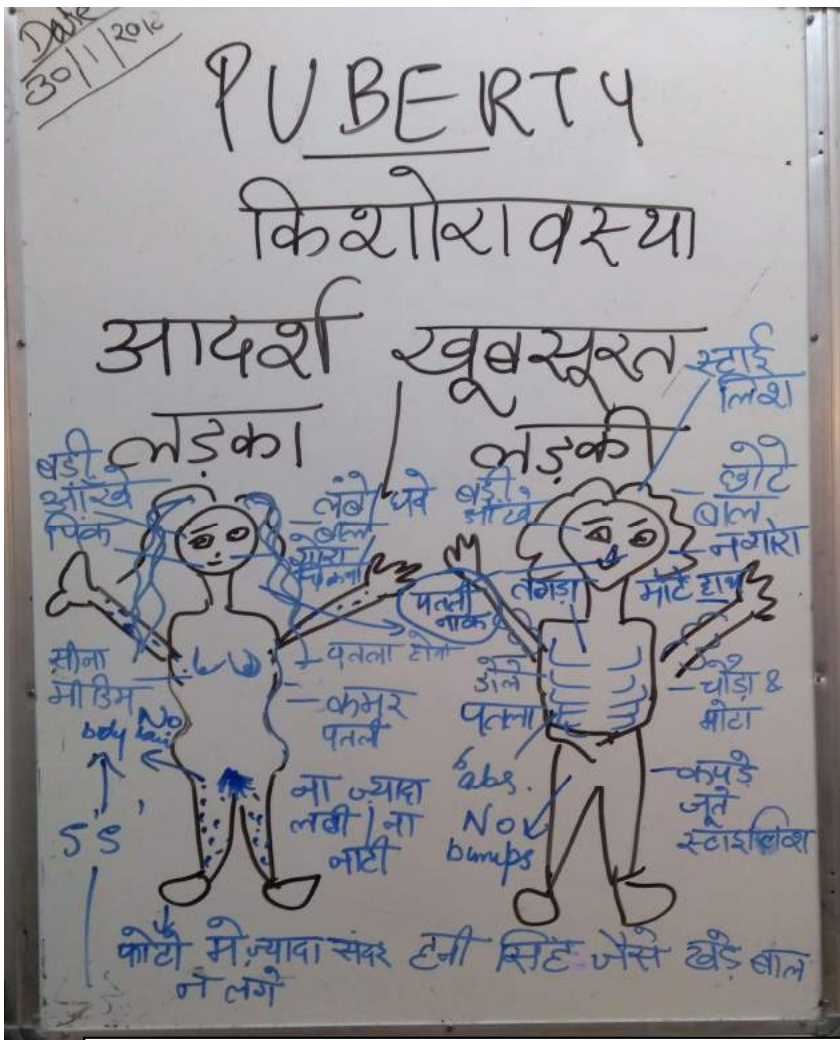
If you all remember, we held sessions on Gender Stereotypes and how we assume things about our friends, family members. We chose helmet for our uncles and make up kits for our mothers, utensils for our sisters and computer for our brothers when asked to select gifts for relatives. This brought forward our ingrained stereotypes based on gender which means we think different things for male and females and see them differently. This difference is mostly discrimination and gives one more power and freedom over the other, here men over women. We then saw films and cases where the makeup was used by a male artist and helmet was used by an all women biker group. We also read stories like 'Ferdinand' and 'Kyu Kyu Ladki'. We saw short videos on hormonal changes that happen in our bodies like 'Main aur meri body' by AOI. We discussed the physical, mental, hormonal and emotional changes that happen in our bodies during Puberty (किशोरावस्था).

In our session on Body Ideals and Beauty Standards, we talked about the process of Socialization (सामाजीकरण) and how this effect our notions of beauty and gender identities. We saw on the board how impossible and superficial idealized (आदर्श) bodies are. We then moved on to talk about the places from where these signals come from like media (films, songs, magazines, video games and serials). We then introspected and realized that some girls

girls thought her hair is not nice because they are brown and another said her teeth is not nice because they are not straight. A boy said her height is small and thus he feels conscious about it. We realized that an ideal man's assets are his studies, qualification, and job and for females it's their physical beauty and appearance. This gap of expectations comes from a system called Patriarchy which makes a discrimination between male and female. We talked about 'Representation', how different bodies like short and dark people are shown as comedy figures and fat women are seen as lazy. We also saw a short video on Photoshop and how bodies are manipulated and altered. We in the end one by one spoke about the things that we like in ourselves and why? Why is it important to accept ourselves as we are and improve on the things that we can like hobbies, studies, passion, relationships. We then in the end talked about 'Body Image' and why it is very important to have a positive body image.

A QUICK BODY IMAGE BOOSTER (THINK AND WRITE)

- **Write things about your body that you enjoy!**
- **3 of your best personality qualities**
- **A compliment you received make you feel good**
- **A piece of clothing or an accessory that makes you feel good.**
- **Compliment your friends. !!!!! 😊 😊**



Busting myths around Periods, we know they are painful and uncomfortable. But it's important to talk about them right?? Photos from Nizamuddin and Ghevra



PYAR KIYA TOH DARNA KYA????

‘**प्यार किया तो डरना क्या**’ हमारी एक पूरे दिन चलने वाली workshop thi jo कुटुंब फाउंडेशन के पियर लीडर्स के साथ September 2017 में हुई थी। यह workshop Nandini aur Prashastika ने आयोजित की थी जिसमें **Gender, Identities, Love, Sexuality aur Relationships** के बारे में चर्चा हुई थी। इस दौरान हमने अलग अलग गतिविधियों aur videos से यह जाना के प्यार किसी मज़हब, जाती, या जेंडर identity ya sexual orientation से बँधा हुआ नहीं है। इसके अलावा हमने **Healthy और Unhealthy Relationships** में फ़र्क जाना, **intimate partner violence**, abuse aur **Consent** (सहमति) की अहमियत जानी। हमने ये भी सीखा के हम सबके लिए प्यार के अलग मायने हो सकते हैं, पर हर मायने में **Self-respect, self-love, trust aur communication** बहुत ज़रूरी है।





Kapil Da performing at **Bokaroo 2017**, a Children's Literature Festival. We took participants of both batches of Nizamuddin to attend the exciting storytelling and music performance.



This photo is of our Ghevra participants who are making posters and paintings for Diwali poster making competition. A lot of them made posters on 'NO CRACKERS, NO SMOKE DIWALI', 'CLEAN AND SAFE DIWALI' and awareness around the health of Plants and Animals '



This particular session of ***Dhamaa Chaukdi*** was held by Kapil Da with our Indradhanush peer leaders and Programme Coordinators on different techniques of drama in class. We learnt the 'Teacher in Role', 'Director's Sculpt', 'Building the Environment' and other drama cum activity based techniques where we learnt how to engage participants in storytelling and build their language skills, comprehension, critical and creative thinking through a story. In this DC we did the story '***Where the Wild Things are***' by Maurice Sendak.

Certificate Distribution on 14th Feb 2018 was held with our Qissebaaz champs who successfully submitted 12 book reviews, attended all the workshops and showed a high level of participation in contribution for DEM. A lot of our Qissagadh members are on their way to get certificates. Certificates and badges are just incentives to young people so that they read and review more books in their Indradhanush batch. We integrate ID class with Qissagadh to create an environment for reading, watching, creating art through films, books and drama. Ghevra is a power hub for Indradhanush. We congratulate all these students and we hope more participants read and review books. Major credit goes to Rahul and Inderjeet, our peer leaders in Ghevra for their commitment and hard work.







**GOAL OF LIFE (GOL) AT
GHEVRA, KHAN MARKET,
ALI VIHAR**

**We have 8 teams from
our side this year in
Delhi Youth League .**



ASHISH AND PARTICIPANTS OF ID ADVANCED LEVEL ENGLISH CLASS



*SANGEETA WITH HER PARTICIPANTS AT NIZAMUDDIN INDRADHANUSH
ENGLISH LANGUAGE BATCH, FOUNDATION AND BASIC*

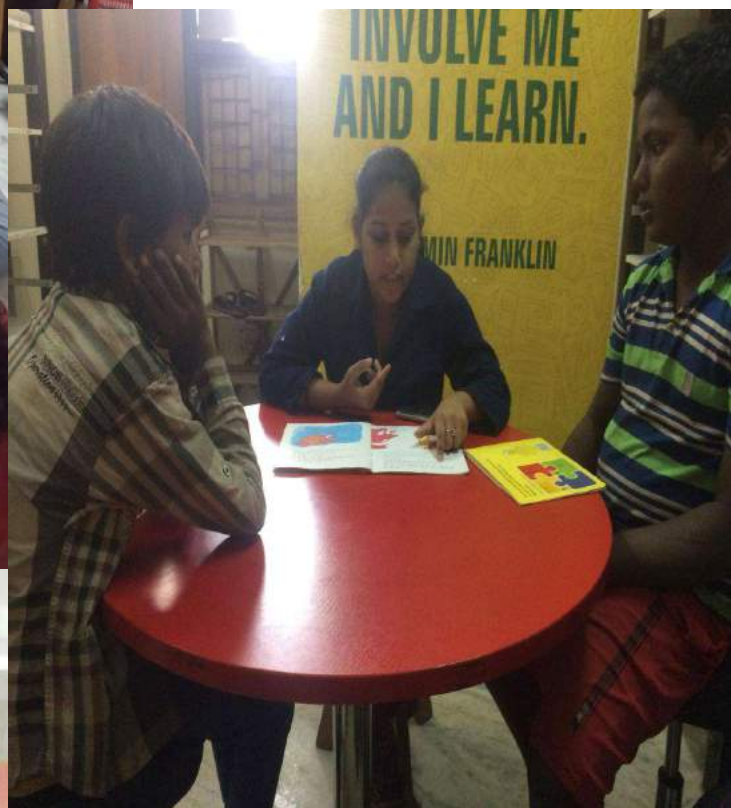




INDRA DHANUSH PARTICIPANTS AT SAVDA GHEVRA. WE HAVE TWO ENGLISH LANGUAGE BATCHES, BASIC AND FOUNDATION.



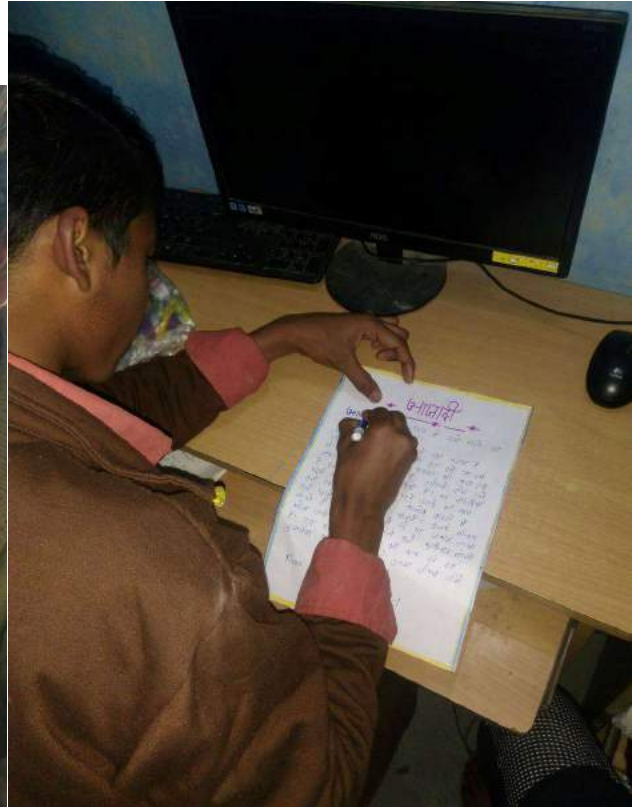
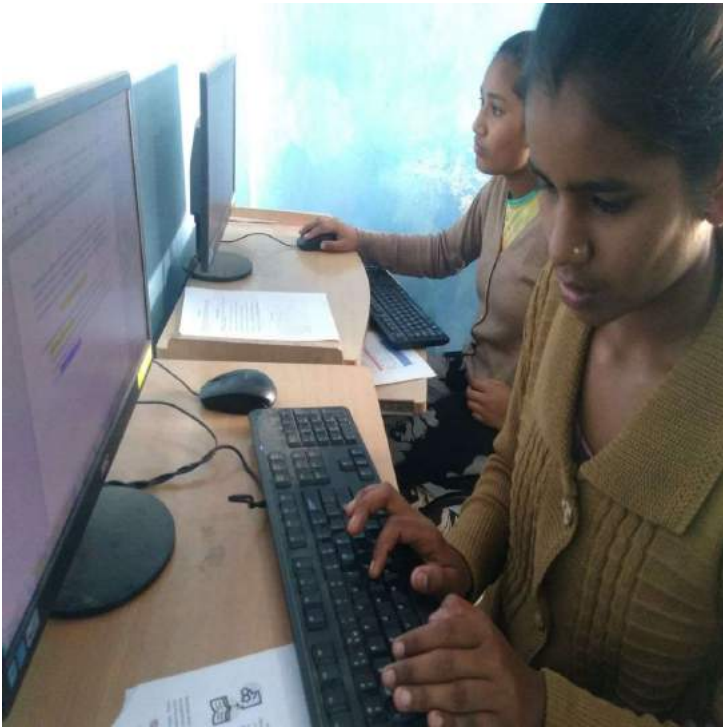
INDRADHANUSH CLASS AT KOTLA MUBARAKPUR BY CHAMPA DIDI



*PARTICIPANTS OF FOUNDATION AND BASIC BATCH AT
NIZAMUDDIN. FOUNDATION LEVEL MATH CLASS BY RITU AND
BASIC LEVEL HINDI BATCH BY RANI (TOP TO BOTTOM)*



***BASIC COMPUTER BATCH BY INDERJEET AT SAVDA
GHEVRA***





Congratulations to Inderjeet for being selected by HLC as the best teacher Computer teacher. We are proud of you!



New Entries in Kutumb

We have a new Goal of Life (GOL) Coordinator, **Amrita**. She is 33 years old and is mother of a 5 year old daughter. She was associated with Naz Foundation (Goal Programme) where she used to empower girls physically, mentally, socially, financially through football. She is a fitness enthusiast and works hard for a change in the society.

According to her, Freedom is “being able to do any work without fear of social norms for a female and freedom to express my feelings toward my choice”.



Champa didi, is our new Hindi teacher for Indradhanush Nizamuddin Basic and Foundation batch. We have to say bye to Rani for good. Champa didi is teaching at Kutumb for more than 12 years and is our oldest peer teacher. She is also an art-craft teacher. She is a little strict but has taught Ashish, Rahul etc. who are now our peer teachers.

हम पंछी

हम पंछी

मत कैद करो पिंजरे में हमको,

मत पहनाओ जंजीर हमारे.

उन्मुक्त विचरने दो गगन में,

मत काटो सुंदर पंख हमारे.

वृक्ष लगाओ आँगन में अपने

पिंजरे का नहीं कोई काम,

वृक्षों पर होंगे नीड़ हमारे,

रहेंगे उन पर सुबह- शाम.

हम पंछी मन के मतवाले

दम घुटता है बंधन में

देश-देश की सैर करें हम

आज़ाद उड़े हम नील गगन में.

हरे वृक्ष होते जहाँ पर

जिस आँगन होती हरियाली,

रहते दिन- रात वहीं पर हम सब

फुदका करते डाली- डाली



Just For Fun

पेश हैं कुछ फिल्मी गाने जो पूछते हैं कुछ सवाल और करते हैं बवाल !!!

करना है क्या मुझको, ये मैंने कब है जाना, लगता है गाऊँगा, ज़िंदगी भर बस ये गाना, होगा जाने मेरा अब क्या ? ओ....

कोई तो बताए मुझे ओ.... गड़बड़ है ये सब क्या ओ....

कोई समझाए मुझे मैं ऐसा क्यों हूँ... (7)

मैं जैसा हूँ, मैं वैसा क्यों हूँ ??

अब मुझको ये है करना, अब मुझे वो करना है

आखिर क्यों मैं ना जानूँ, क्या है की जो करना है

लगता है अब जो सीधा, कल मुझे लगेगा उल्टा

देखो ना मैं हूँ जैसे, बिल्कुल उल्टा पुल्टा

बदलूँगा मैं अभी क्या मानु तो क्या मानु मैं ? ओ.... सुधरूँगा मैं कभी क्या

ये भी तो ना जानूँ मैं जाने अब मेरा होना क्या .. ओ...

लगता है तुमको क्या

जाने अब मेरा होना क्या है

क्या मैं हूँ, जैसा बस वैसा रहूँगा

लगता है गाऊँगा, ज़िंदगी भर बस ये गाना

Film – Lakshya

**क्यूँ चलती है पवन क्यूँ झूमें है गगन क्यूँ मचलता है मन ना तुम जानो ना हम
क्यूँ आती है बहार क्यूँ लुटता है करार क्यूँ होता है प्यार ना तुम जानो ना
हम!!!!**

**“Everybody in this country should learn to program a computer, because
it teaches you how to think”**

-Steve Jobs

As the above saying goes we all know that we live in 21st century where everything is Technology based on our daily activities. As the career work many people opt for startup being an entrepreneur, because the main reason is our grandparents had a career of working in a govt. jobs such as in post-office, railway, etc. and for our parents it was like working in a corporate job is a big thing but for our generation it is starting a startup is a next big thing to achieve.

The Tech startup are emerging as a new sector to the economy and the coders are the wizards to rule this new tech world and even in corporates

The people who are not in science background can also be seem to attracted in tech field to learn coding because you don't have to be genius to learn coding you just have to be determined and logical to achieve it. The world is changing so we also have to adapt it.

By Nanda

***CONTRIBUTORS : SANGEETA, INDERJEET, RAHUL,
NANDA, ASHISH , PRASHASTIKA***

EDITORS : PRASHASTIKA AND ASHISH